Chapter 1

Bihar board 9th class Hindi Notes कहानी का प्लॉट

लेखक – परिचय

- शिवपूजन सहाय

कहानी का प्लॉट

शिवपूजन सहाय का जन्म 9 अगस्त 1893 ई. को ग्राम – उनवास ,जिला बक्सर (बिहार)में हुआ था |1912 ई. मैं आरा के एक हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की| सामाजिक जीवन का शुभारंभ हिंदी शिक्षक के रूप में किया और साहित्य क्षेत्र में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आए |आरंभिक लेख तथा कहानियां शिक्षा, लक्ष्मी, मनोरंजन तथा पाटलिपुत्र आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित है | 1921-22 ई. में कोलकाता के 'मतवाला मंडल' के सदस्य हुए और कुछ समय के लिए आदर्श उपन्यास तरंग तथा समन्वय आदि पत्रों का समन्वय और संपादन का कार्य किया | 1934 ई में लहेरियासराय जाकर मासिक पत्र 'बालक' का संपादन किया | स्वतंत्रता के बाद बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के संचालक तथा बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रकाशित 'साहित्य' नामक शोध समीक्षा प्रधान मासिक पत्र के संपादक बने|
इनकी कृतियों में "देहाती दुनिया" (1926 ई.) में प्रयोगात्मक चरित्र-प्रधान औपन्यासिक कृति है|

कहानी का सारांश

' कहानी का प्लॉट' शिवपूजन सहाय द्वारा रचित आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई आंचलिक कहानी है | शिवपूजन सहाय एक सफल कहानीकार हैं परंतु स्वयं को कहानी – लेखन योग्य प्रतिभाहीन बताते हैं | इसका कारण उनका विनोदी स्वभाव और बड़प्पन है |
कहानीकार के गांव के पास एक छोटा सा गांव है उसी गांव में एक मुंशी जी रहते थे| उनकी एक पुत्री थी, उसका नाम था 'भगजोगनी'| मुंशी जी के बड़े भाई दरोगा थे और दरोगा जी ने खूब रुपया कमाया था | दरोगा जी जो कमाये आए उसे अपनी जिंदगी में ही फुंक- ताप गए | उनके मरने के बाद सिर्फ एक घोड़ी बची थी ,वह भी महज 7 रुपये की थी| इसी घोड़ी को बेच कर मुंशीजी ने दरोगा जी का श्राद्ध -संस्कार किया | जब दरोगा जी जिंदा थे तो मुंशी जी रोज 32 बटेर और 14 चपाती उड़ा जाते थे | हर साल एक नया जलसा करते थे | परंतु दरोगा जी के मरने के बाद तो चुल्लू भर करवा तेल मिलना भी मुहाल हो गया था | "सचमुच अमीरी की कब्र पर पंक्ति गरीबी बड़ी ही जहरीली होती है|" मुंशी जी की बेटी भागजोगनी गरीबी में पैदा हुई थी और जन्मते ही मां के दूध से वंचित होकर टुअर हो गई थी | वह अभागिन तो थी ही परंतु इसमें शक नहीं कि सुंदरता में अंधेरे घर का दीपक थी |
कहानीकार पहले पहल उसे 11 वर्ष की अवस्था में देखे थे | परंतु उसकी दर्दनाक गरीबी को देखकर उसका कलेजा कांप उठता था| जब वह सयानी हो गई तो मुंशी जी को उसकी शादी की चिंता हुई | मगर हिंदू समाज कब बिना दहेज के किसी कन्या का वरण करने वाला था | कहानीकार ने भी अथक प्रयास किये कि उसकी शादी किसी भले मानस घर के लड़के से हो जाए | परंतु यह तो ना हो सका | उसकी शादी 40-42 साल के अधेर से कर दी गई | वह अचानक चल बसा और पुनः भगजोगनी का विवाह उसके सौतेले बेटे से कर दी गई | भारतीय समाज की विद्रूपताओ का पर्दाफाश करती यह कहानी बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, गरीबी , बुरे कर्म का बुरा प्रभाव इत्यादि अर्थों को अपने में समेटे हुए समाज की कड़वी सच्चाई उसे रूबरू कराती है|

https://www.evidyarthi.in/